(1)

तरनि–तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।
झुके कूल सों जल परसन हित मनहुँ सुहाए।।
किधौं मुकुर मैं लखत उझकि सब निज–निज सोभा।
कै प्रनवत जल जानि परम पावन फल लोभा।।
मनु आतप वारन तीर कौं सिमिटि सबै छाये रहत।
कै हरि सेवा हित नै रहे निरखि नैन मन सुख लहत ।।

1. प्रस्तुत पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
   उत्तर– कवि = भारतेन्दु हरिश्चन्द्र शीर्षक = 'यमुना–छवि'
2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिये।
   उत्तर – झुके हुए तमाल के वृक्षों को देखकर ऐसा लग रहा है मानो तट को धूप–ताप से बचाने के लिए वे एक साथ सिमट कर उसे छाया प्रदान कर रहे हो।
3. प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने किसका वर्णन किया है?
   उत्तर – प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने यमुना नदी के किनारे छाए हुए तमाल के वृक्षों का वर्णन किया है। जिन्हें देखकर कवि के मस्तिष्क में भिन्न–भिन्न छायाचित्र निर्मित होते हैं।
4. यमुना नदी के किनारे खड़े वृक्षों को देखकर कवि को क्या प्रतीत होता है?
   उत्तर– नदी के किनारे खड़े वृक्षों को देखकर कवि को ऐसा प्रतीत होता है जैसे तमाल के वृक्ष यमुना नदी को स्पर्श करना चाहते हों या फिर वे झुककर नदी के पानी में अपना प्रतिबिम्ब देखना चाहते हों।
5. प्रस्तुत पंक्तियों में भाषा, रस, छंद व अलंकार है?
   उत्तर – रस – श्रृंगार छंद – छप्पय अलंकार – उत्प्रेक्षा , संदेह, अनुप्रास भाषा – ब्रज।
6. 'तरनि– तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये' में कौन–सा अलंकार है ?
   उत्तर– अनुप्रास अलंकार।
7. "किधौं मुकुर मैं लखत उझकि सब निज–निज शोभा" का आशय स्पष्ट कीजिए।
   उत्तर– कवि कहता है कमाल के वृक्षों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो उछल कर सभी वृक्ष यमुना जल रूपी दर्पण में अपनी–अपनी शोभा देख रहे हो।
8. यमुना तट पर वृक्ष किस रूप में सुशोभित हैं ? अथवा तट पर वृक्ष किस रूप में दिखाई पड़ रहे हैं?
   उत्तर– परोपकारी, सुखकारी और दुःखनाशक रूप में दिखाई पड़ रहे हैं
9. वृक्ष जल के दर्पण में क्या देख रहे हैं? अथवा वृक्ष जल दर्पण में क्या देखना चाहते हैं?
   उत्तर– अपनी अपनी शोभा|
10. 'मनु आतप वारन तीर' में अलंकार बताइए।
    उत्तर– उत्प्रेक्षा अलंकार|

(2)

तिन पै जेहि छिन चन्द जोति राका निसि आवति।
जल मैं मिलिकै नभ अवनी लौं तान तनावति।।
होत मुकुरमय सबै तबै उज्जल इक ओभा।
तन मन नैन जुड़ात देखि सुन्दर सो सोभा।।
सो को कबि जो छबि कहि सकै ता छन जमुना नीर की।
मिलि अवनि और अम्बर रहत छबि इक–सी नभ तीर की।

1. प्रस्तुत पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।

   उत्तर– कवि = भारतेन्दु हरिश्चन्द्र शीर्षक = 'यमुना–छवि'

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिये।

   उत्तर– यमुना जल की इस सुन्दरता का वर्णन कोई कवि नहीं कर सकता है। ऐसे समय में पूर्णिमा के चाँद की किरणों से आकाश और नदी के किनारों की सुन्दरता आकाश से पृथ्वी तक जैसे एक समान ही दिखाई पड़ती है।

3. 'मनु हरि दरसन हेत चन्द्र जल बसत सुहायो' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि यमुना नदी में चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को देखकर कवि को ऐसा लग रहा है, मानो चन्द्रमा यमुना के जल में यह सोचकर आ बसा है कि जब कृष्ण यमुना–तट पर विहार करने आएँगे, तब उसे उनके दर्शन प्राप्त हो जाएँगे।

4. कवि ने चन्द्रमा की किन–किन रूपों में कल्पना की है?

   उत्तर - कवि ने यमुना नदी के जल में चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को देखकर विभिन्न कल्पनाएँ की हैं कभी वह उसे पानी पर नृत्य करता हुआ दिखाई देता है, कभी वह श्रीकृष्ण के मुकुट की आभा के समान प्रतीत होता है तथा कभी वह कवि को यमुना के हृदय के रूप में दिखाई देता है।

5. प्रस्तुत पंक्तियों में भाषा, रस, छंद व अलंकार है?

   उत्तर – रस – श्रृंगार छंद – छप्पय अलंकार – उत्प्रेक्षा , अनुप्रास भाषा – ब्रज।

(3)

परत चन्द्र प्रतिबिम्ब कहूँ जल मधि चमकायो।
लोल लहर लहि नचत कबहुँ सोई मन भायो।
मनु हरि दरसन हेत चन्द्र जल बसत सुहायो।
कै तरंग कर मुकुर लिये सोभित छबि छायो।

कै रास रमन में हरि मुकुट आभा जल दिखरात है।
कै जल उर हरि मूरति बसति ता प्रतिबिम्ब लखात है।।

1. प्रस्तुत पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
   उत्तर– कवि = भारतेन्दु हरिश्चन्द्र शीर्षक = 'यमुना–छवि'
2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिये।
   उत्तर– रास–क्रीड़ा में रमे हुए, श्रीकृष्ण के मुकुट की आभा ही इस चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब के रूप में, यमुना के जल में प्रतिबिम्बित हो रही हो। कवि चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को देखकर कल्पना कर रहे हैं कि यह भी हो सकता है कि यमुना के हृदय में चन्द्रमा के रूप में, कान्तिमान भगवान श्रीकृष्ण की छवि बसी हुई है एवं यह प्रतिबिम्ब उन्हीं का है।
3. प्रस्तुत पंक्तियों में भाषा, रस, छंद व अलंकार है?
   उत्तर – रस – श्रृंगार छंद – छप्पय अलंकार – उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, अनुप्रास भाषा – ब्रज।
4. कवि ने चन्द्रमा की किन–किन रूपों में कल्पना की है?
   उत्तर – कवि ने यमुना नदी के जल में चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को देखकर विभिन्न कल्पनाएँ की हैं कभी वह उसे पानी पर नृत्य करता हुआ दिखाई देता है, कभी वह श्रीकृष्ण के मुकुट की आभा के समान प्रतीत होता है तथा कभी वह कवि को यमुना के हृदय के रूप में दिखाई देता है।
5. किसके मुकुट की शोभा जल में प्रतीत होती है?
   उत्तर– श्री कृष्ण के|
6. मुकुर तथा लखात शब्दों के अर्थ लिखिए|
   उत्तर– मुकुर– दर्पण , लखात – दिखना|

dhu coaching classes

(4)

कबहुँ होत सत चन्द कबहुँ प्रगटत दुरि भाजत।
पवन गवन बस बिम्ब रूप जल में बहु साजत।।
मनु ससि भरि अनुराग जमुन जल लोटत डोलै।
कै तरंग की डोर हिंडोरनि करत कलोलें।।
कै बालगुड़ी नभ में उड़ी सोहत इत उत धावती।
कै अवगाहत डोलत कोऊ ब्रजरमनी जल आवती।।

1. प्रस्तुत पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
2. उत्तर– कवि = भारतेन्दु हरिश्चन्द्र शीर्षक = 'यमुना–छवि'
3. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिये।

उत्तर– लहरों के साथ इधर–उधर हिलते हुए प्रतिबिम्ब को देखकर कवि को ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी बच्चे के द्वारा उड़ाई गई पतंग आकाश में। इधर–उधर उड़ती हुई सुशोभित हो रही हो। या फिर कोई ब्रज–युवती जल–विहार करती हुई चली आ रही हो। कवि के मन में चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब से सम्बन्धित – कई कल्पनाएँ मूर्त स्वरूप धारण करती है।

4. प्रस्तुत पंक्तियों में भाषा, रस, छंद व अलंकार है?

उत्तर – रस – श्रृंगार छंद – छप्पय अलंकार – उत्प्रेक्षा , संदेह , अनुप्रास भाषा – ब्रज।

5. कवि को यमुना नदी के जल पर पड़े चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को देखकर क्या अनुभूति होती है?

उत्तर– कवि जब यमुना नदी के जल पर चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को देखता है तो कभी उसे लहरों पर सौ–सौ चन्द्रमा दिखाई देते हैं, कभी वह उसे दूर जाकर अदृश्य होता हुआ अनुभूत होता है। कभी वह उसे जल में झूला झूलते हुए प्रतीत होता है तो कभी उसे उसमें बच्चे द्वारा उड़ाई गई पतंग की अनुभूति होती है।

6. 'कै बालगुड़ी नभ में उड़ी सोहत इत उत धावती।' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कवि यमुना के जल पर चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को देखकर कल्पना करते हुए कहता है कि यमुना की लहरों पर चन्द्रमा का हिलता हुआ प्रतिबिम्ब ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो किसी बच्चे की पतंग आकाश में हवा के जोर से इधर–उधर हिल रही हो।

7. इस पद्यांश में कवि ने किस प्रसंग का वर्णन किया है?

उत्तर– पद्यांश में कवि भारतेन्दु ने यमुना के जल पर पड़ने वाले चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब का वर्णन किया है।

8. 'मनु ससि भरि अनुराग जमुन जल लोटत डोलै' में कौन–सा अलंकार है?

उत्तर – उत्प्रेक्षा अलंकार।

coaching classes

(5)

मनु जुग पच्छ प्रतच्छ होत मिटि जात जमुन जल।
के तारागन ठगन लुकत प्रगटत ससि अबिकल।।
कै कालिन्दी नीर तरंग जितो उपजावत।
तितनो ही धरि रूप मिलन हित तासों धावत।।
कै बहुत रजत चकई चलत के फुहार जल उच्छरत।
कै निसिपति मल्ल अनेक बिधि उठि बैठत कसरत करत।।

1. प्रस्तुत पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
2. उत्तर– कवि = भारतेन्दु हरिश्चन्द्र शीर्षक = 'यमुना–छवि'
3. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिये।+

उत्तर– कवि को ऐसा लगता है मानो जल–प्रतिबिम्ब के रूप में जल के भीतर चाँदी की कई चकई चल रही हों या जल की फुहारें उठ रही हों या फिर चन्द्रमारूपी पहलवान उठ–बैठकर कई प्रकार की कसरतें कर रहा हो।

4. प्रस्तुत पंक्तियों में भाषा, रस, छंद व अलंकार है?

उत्तर – रस – श्रृंगार छंद – छप्पय अलंकार – उत्प्रेक्षा, रूपक, संदेह, मानवीकरण, अनुप्रास भाषा – ब्रज।

5. कसरतें करते कौन दिखाई पड़ रहा है?

उत्तर – चंद्रमा रूपी पहलवान कसरत करते दिखाई पड़ रहा है?

6. तरंगें कौन उत्पन्न कर रहा है?

उत्तर– यमुना का जल.

7. यमुना के जल में चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब के दिखने व छिपने की तुलना कवि किससे करता है?

उत्तर– यमुना के जल में चंद्रमा के प्रतिबिंब के देखने वाले अपने की तुलना कभी कृष्ण पक्ष तथा शुक्ल पक्ष दोनों पक्षों से करता है.

8. कवि द्वारा यमुना की छवि का किस समय का वर्णन किया गया है ?

उत्तर- रात के समय का वर्णन किया गया है|

9. कवि ने चन्द्रमा के किन रूपों का वर्णन किया है?

उत्तर- कवि ने चन्द्रमा के ठग तथा पहलवान आदि रूपों का वर्णन किया है|

10. 'जात जमुन जल' में कौन–सा अलंकार है?

उत्तर–अनुप्रास अलंकार

(6)

कूजत कहुँ कलहंस कहूँ मज्जत पारावत।।
कहुँ कारण्डव उड़त कहूँ जल कुक्कुट धावत।।
चक्रवाक कहुँ बसत कहूँ बक ध्यान लगावत
सुक पिक जल कहुँ पियत कहूँ भ्रमरावलि गावत।।
एकहुँ तट पर नाचत मोर बहु रोर बिबिध पच्छी करता।
जल पान नहान करि सुख भरे, तट सोभा सब जिय धरत।।।

1. प्रस्तुत पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।

उत्तर– कवि = भारतेन्दु हरिश्चन्द्र शीर्षक = 'यमुना–छवि'

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिये।

उत्तर– कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र यह कह रहे हैं कि यमुना के किनारे कहीं मोर नृत्य कर रहे हैं, तो कहीं विभिन्न प्रकार के पक्षी मिलकर कलरव करते हुए अत्यधिक शोर कर रहे हैं। कवि कह रहे

हैं कि इस प्रकार विभिन्न प्रकार के पक्षी यमुना के जल का पान एवं उसमें स्नान तथा विहार करते हुए सब प्रकार का सुख पाते हुए यमुना–तट की शोभा बढ़ा रहे हैं। यमुना के तट की एवं स्वयं उसकी शोभा को उन्होंने अपने हृदय में अच्छी तरह धारण कर लिया है।

3. प्रस्तुत पंक्तियों में भाषा, रस, छंद व अलंकार है?

उत्तर – रस – शांत छंद – छप्पय अलंकार – अनुप्रास भाषा – ब्रज।

4. परावत, कारण्डव, सुक, पिक आदि शब्दों के अर्थ लिखिए|

उत्तर– परावत– कबूतर, कारण्डव– बत्तख, सुक– तोता , पिक– कोयल|

5. प्रस्तुत पंक्तियों में किस नदी का वर्णन है?

उत्तर– यमुना नदी का|

6. जल कौन पी रहा है तथा नृत्य कौन कर रहा है?

उत्तर– जल सुक तथा पिक पी रहे हैं तथा नृत्य मोर कर रहा है|

Gyansindhu coaching classes